बेगम पुरा / सिख दर्शन क्या है?
और
यह किसके लिए है?

दिनेश सिंघ एलएल.एम.

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ |
नाँ तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
ऊहाँ खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोमन सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
ऊहाँ गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीत हमारा ॥३॥२॥

"चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊं,
गीदड़ों को मैं शेर बनाऊं ।
सवा लाख से एक लड़ाऊं,
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊँ ।।"

~ दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंघ साहेब जी

गगन दमामा बाजिओ, परिओ नीसाने घाओ।
खेत जो मांडिओ सूरमा, अब जूझन को दाओ।
सूरा सो पहचानिए, जो लड़े दीन के हेत।
पुरजा-पुरजा कट मरे, कबहूं न छाड़े खेत।

~ महायोद्धा कबीर साहेब जी

ੴ

समर्पण और विशेष आभार

यह किताब समर्पित है
सरदार करनैल सिंघ अंकल जी, सरदार गुरुदेव सिंघ अंकल जी,
सरदार जसवीर सिंघ अंकल जी को
जिनके मार्गदर्शन और सहयोग से
मेरे लिए यह किताब लिखना संभव हो सका ......

भूमिका

विश्व भर में जितनी भी क्रांतियां हुई है उन क्रांतियों के पीछे दर्शन था दर्शन ने ही क्रांति करने के लिए लोगों को प्रेरित किया। दर्शन से ही सत्ता बनती है, सत्ता बिगड़ती है। दर्शन के द्वारा ही लोगों पर राज किया जाता है। दर्शन के द्वारा ही लोगों को गुलाम बनाया जाता है। दर्शन के द्वारा ही लोगों को गैर बराबरी के दलदल में धकेल दिया जाता है।

भारत के दबे कुचले लोगों को ब्राह्मणवादी दर्शन के द्वारा जातिवाद, ऊंचनीच,छुआछूत, भेदभाव और गुलामी में जकड़ लिया तब उस भयानक दौर में संतों और गुरु साहिबानों ने भारत के शूद्रों अछूतों को ब्राह्मणवादियों की गुलामी में से बाहर निकालने के लिए उनको समानता, प्रेम और भाईचारा सिखाने के लिए उनको पातशाही देने के लिए उनको राज देने के लिए सिख दर्शन/बेगम पुरा का महान् दर्शन दिया जो धन धन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है।

इस महान दर्शन पर चलकर दबे कुचले लोग गैर बराबरी ऊंचनीच छुआ छूत भेदभाव और गुलामी से मुक्त हुए।

जिन लोगों को नीच अछूत शूद्र कहा जाता था जिनको नीच अछूत शूद्र कहकर अपमानित किया जाता था जब वे गुरु साहिबान की शरण में आए तो उनकी सदियों पुरानी गुलामी दूर हुई उनको मानवीय गरिमापूर्ण जीवन मिला। उनको राज करने की प्रेरणा मिली।

गुरु साहिबानों ने अपने दर्शन के साथ कभी समझौता नहीं किया। गुरु साहिबान का दर्शन सम्पूर्ण मानवता के लिए है। गुरु साहिबान का दर्शन पूरे विश्व के लिए है।

गुरु साहिबान का दर्शन ही विश्व में मानवता प्रेम और भाईचारा स्थापित कर सकता है। इसलिए आप इस दर्शन को समझें और अपने जीवन में उतारें आपकी गुलामी, आपका डर, आपका भय पूर्णतः खत्म हो जाएगा आप इस दर्शन को अपनाकर वीर योद्धा बनोगे। और अपने खोए हुए राज को प्राप्त करोगे।

हमारा उद्देश्य भारत के दबे कुचले दीन हीन गरीबों को सदियों पुरानी गुलामी के दुष्चक्र में से बाहर निकालना है। और पूरे भारत में खालसा राज स्थापित करना है तभी भारत विश्व शक्ति बनेगा। जो तभी संभव हो सकेगा, जब आप हमारा इस अभियान में साथ और सहयोग देंगे।

दिनेश सिंघ एलएल.एम.
नई दिल्ली
8882432930

सिख दर्शन/बेगम पुरा का महान दर्शन क्या है ? और किसके लिए है ??

प्रस्तावना ~ सिख दर्शन विश्व का सबसे पुराना दर्शन है जो मानवता, समानता, प्रेम और भाईचारे पर आधारित है, कहना चाहिए यह दर्शन सृष्टि की शुरुआत से ही है। जो सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है, जिन जिन महापुरुषों ने इस दर्शन का अनुसरण किया है, उन्होंने मानवता, समानता, प्रेम, भाईचारे और सत्य की मिसाल कायम की है।

ये दर्शन निंदा, चुगली, झूठ,चोरी, बेईमानी, छल,कपट, ईर्ष्या, द्वेष ,बैर, विरोध काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि विकारों से मुक्ति के लिए युक्ति बताता है। सच्चे गुरु की शरण में लग कर लोग गुरु से उपदेश लेकर अकाल पुरख के नाम का सिमरन करते हुए विषय विकारों को त्यागकर अपने मन को जीत कर स्वयं पर राज करते हैं, और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 6 पर जपुजी साहिब की पौड़ी नंबर 28 में आता है,

"मनि जीतै जगु जीतु"

अर्थात जो मनुष्य अपने मन को जीत लेता है वह पूरे संसार को जीत सकता है।

सिख दर्शन हमें विषय विकारों पर किस प्रकार से विजय हासिल करनी है, किस प्रकार से हमें अपनी इंद्रियों को अपने नियंत्रण में रखना है, और किस प्रकार से हमें अपने मन को जीतना है, यह दर्शन मन को जीतना सिखाता है।

जब मनुष्य अपने मन को जीतकर निर्विकार हो जाता है, तब उसके हृदय में समता, सत्य और प्रेम का भाव पैदा होता है, जिससे मनुष्य सभी के साथ बराबरी, प्रेम और भाईचारे का व्यवहार करता है। मन को जीतने के बाद मनुष्य मन की गुलामी से आजाद हो जाता है, और वह अपने मन पर राज करता है। सिख दर्शन राज करने का दर्शन है। यह राज कैसा होगा ? उसकी व्याख्या श्री ग्रंथ साहिब जी में पन्ना नंबर 345 पर दर्ज भगत रविदास जी के शब्द के माध्यम से बेगम पुरा नामक एक आदर्श राज्य का वर्णन है।

भगत रविदास जी का यह शबद "बेगमपुरा" एक आदर्श समाज और हलीमी राज का दर्शन है। जहाँ सभी लोग समानता, शांति और आनंद में रहते हैं। जहाँ कोई दुःख, चिंता, या अन्याय चोरी, टैक्स नहीं है। लोग खुले तौर पर जहां मन आए वहां विचरण करते हैं।

आइए इस शबद की व्याख्या और अर्थ को विस्तार से समझते हैं।

सिख दर्शन/बेगम पुरा का महान दर्शन ~

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ |
नाँ तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥

अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
ऊहाँ खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोमन सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
ऊहाँ गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीत हमारा ॥३॥२॥

बेगमपुरा नाम का यह शहर ऐसा है जहाँ कोई दुःख या चिंता नहीं है। इस आदर्श शहर में कोई कर (tax), राजस्व (खिराजु) या मालगुजारी (मालु) नहीं लगता है। यहाँ किसी प्रकार का भय, पाप, या अपराध नहीं है, और न ही किसी प्रकार का जुल्म या अत्याचार होता है।

अब मुझे यह सुंदर देश (वतन) मिल गया है, जहाँ मेरे सभी भाई (लोग) हमेशा के लिए खुश और शांतिपूर्ण तरीके से रहते हैं।

यह राज्य (पातिशाही) हमेशा के लिए स्थायी (काइमु) और शाश्वत (दाइमु) है। यहाँ पर सभी लोग समान हैं, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि से हों। यह शहर हमेशा बसाहट वाला (आबादानु) और प्रसिद्ध (मसहूर) है। यहाँ सभी लोग समृद्ध (गनी) और संतुष्ट (मामूर) रहते हैं।

यहाँ हर व्यक्ति अपने मनमुताबिक जीवन व्यतीत करता है, और कोई भी किसी को रोकता या टोकता नहीं है। भगत रविदास जी कहते हैं कि मैं (खलास चमारा) इस शहर का नागरिक हूँ जो विषय विकारों से मुक्त हूं, और इस शहर में रहने वाला हर एक व्यक्ति मेरा मित्र है।

बेगमपुरा का महान दर्शन एक संपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तन का आंदोलन है, जो सामाजिक समानता, न्याय और मानवता के मूल्यों पर आधारित है। भगत रविदास जी ने इसे एक आदर्श समाज के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें जाति, वर्ग, ऊंच नीच, छुआछूत और अन्य भेदभावों के लिए कोई स्थान नहीं है।

बेगमपुरा का दर्शन उस समय के समाज में व्याप्त जातिवाद, भेदभाव, ऊंच नीच, छुआछूत, नफरत के खिलाफ एक सशक्त विचारधारा थी।

भगत रविदास जी ने इस दर्शन के माध्यम से यह संदेश दिया कि सभी मनुष्य समान हैं, और उन्हें समान हक और अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए।

ब्राह्मण ने दबे कुचले लोगों को धर्म के नाम पर चार वर्णों और हजारों जातियों में बांट दिया है, और लोगों में फूट डालकर लोगों को अपना गुलाम बना लिया है। और इस गुलामी की व्यवस्था को ईश्वर का आदेश बताकर धर्म का चोला ओढ़ा दिया है। और वर्ण व्यवस्था को ईश्वरीकृत बताकर भोले भाले लोगों को अपनी गुलामी में जकड़ लिया है। ब्राह्मण का गैरबराबरी वाला धर्म

ईश्वर का आदेश नहीं है, बल्कि ये ब्राह्मण का षडयंत्र, ब्राह्मण की गुलामी का फंदा और ब्राह्मण का धंधा है। जो लोगों को मूर्ख बनाकर लूटने के लिए है, गुलाम बनाए रखने के लिए है।

भगत रविदास जी कहते हैं ~

ऐसा चाहूं राज मैं जहां मिले सबन को अन्न।

छोट बड़े सब सम बसै रविदास रहे प्रसन्न।।

भगत रविदास जी राज लाने की बात कहते हैं।

ब्राह्मणवादियों ने अपने द्वारा बनाई हुई वर्ण व्यवस्था के दम पर इस देश के लोगों को मूर्ख बनाकर लूटा और गुलाम बना लिया और जब ये गुलामी पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ी तो ये गुलामी, गुलामी की संस्कृति बन गई।

और इस गुलामी की संस्कृति को दबे कुचले लोग जाने अनजाने में कई पीढ़ियों से फॉलो कर रहे हैं।

भगत रविदास जी ने दीन गरीब लोगों को इस गुलामी में से बाहर निकालने के लिए सांस्कृतिक परिवर्तन का महान् और क्रांतिकारी आंदोलन चलाया था ....

भगत रविदास जी गुलामी से मुक्ति पाने के लिए स्वराज की बात कहते हैं-

रविदास मानुष करि बसन कूं, सुख कर है दुई ठांव।

इक सुख है "स्वराज" महिं दूसर मरघट गांव।।

गुलामी से मुक्त होने के लिए भगत रविदास जी ने कहा था ~

"पराधीनता पाप है जान लेहु रे मीत।

रविदास पराधीन से कौन करे है प्रीत।।"

पराधीन कौ दीन क्या ? पराधीन बेदीन।

रविदास पराधीन को सबही समझें हीन।।

भगत रविदास जी ने भारत के पराधीन (गुलाम) लोगों को आजाद कराने के लिए बहुत बड़ा वैचारिक युद्ध लड़ा था।

और गुलाम लोगों को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए

कहा था ~

"साधु संगति मिलि ऐसे रहिए जैसे मधु पे मखीरा "

भगत रविदास जी कहते हैं कि तुम्हें अगर बैरी से लड़ना है तो तुम्हें इस तरह से रहना पड़ेगा जैसे शहद पर मधुमक्खियों रहती है अगर मधुमक्खियों को कोई छेड़ता है तो छेड़ने वाले पर सारी मधुमक्खियां एकजुट होकर के अटैक करती हैं।

भगत रविदास जी ने गुलामों को गुलामी से मुक्त करने के लिए बेगम पुरा का महान् दर्शन दिया।

सिख दर्शन और बेगम पुरा का महान दर्शन एक ही है।

जो दुनियां का महानतम दर्शन है।

सिख दर्शन/बेगम पुरा दर्शन दर्शन एक संपूर्ण क्रांति है।

सिख दर्शन ~

सिख दर्शन सृष्टि के आदि काल से ही है जो गुरु सिख परंपरा के माध्यम से आज तक कायम है और हमेशा कायम रहेगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 999 पर श्री गुरु अरजन साहेब जी ने सिख दर्शन के इतिहास को उचारा है जो इस प्रकार से है।

"पाँच बरख को अनाथु धू बारिकु हरि सिमरत अमर अटारे ॥
पुत्र हेति नाराइणु कहिओ जमकंकर मारि बिदारे ॥१॥
मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥
मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥१॥ रहाउ ॥
बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक तरे बिचारे ॥
गजपति पारि उतारे ॥२॥
कीनी रखिआ भगत प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥
बिदरु दासी सुतु भइओ पुनीता सगले कुल उजारे ॥३॥
कवन पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥
आइओ साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥४॥२॥"

अकाल पुरख के परमभक्त प्रहलाद, ध्रुव, वाल्मीकि,सुपच, विदुर, श्याम आदि रहे हैं जिन्होंने सिख दर्शन का अनुसरण करते हुए अकाल पुरख के नाम का सिमरन करते हुए उस परम सत्य को प्राप्त किया है।

सच्चे पातशाह श्री गुरु नानक साहिब जी ने सिख दर्शन अपनाने वाले परमात्मा के सच्चे भक्तों की वाणी का संकलन किया, सभी महापुरुषों की वाणी को पढ़ने पर ज्ञात होता है कि सभी का दर्शन एक ही है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 1393 पर श्री गुरु अमरदास जी का शब्द है। जो शब्द प्रहलाद को प्राप्त हुआ वही शब्द श्री गुरु अमरदास जी को प्राप्त हुआ।

शब्द का मतलब दर्शन से है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में पन्ना नंबर 1394 पर श्री गुरु अमरदास जी का शब्द है।

"जि मति गही जैदेवि जि मति नामै संमाणी ॥
जि मति त्रिलोचन चिति भगत कंबीरहि जाणी ॥
रुकमाँगद करतूति रामु जंपहु नित भाई
अंमरीकि प्रहलादि सरणि गोबिंद गति पाई ॥
तै लोभु क्रोधु त्रिसना तजी सु मति जल जाणी जुगति ॥
गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु पावउ मुकति ॥४॥१३॥"

इस शब्द का मतलब है कि जिस दर्शन पर भगत जै देव जी ने काम किया उसी दर्शन पर भगत नामदेव ने काम किया, उसी दर्शन पर भगत कबीर साहेब जी और भगत त्रिलोचन जी ने काम किया और उसी दर्शन को भगत अम्बरीष और भगत प्रहलाद ने अपनाया।

और उसी दर्शन पर काम करते हुए सिख गुरु साहिबान ने आदर्श कायम किया।

अतः स्पष्ट है कि सिख दर्शन बहुत पुराना दर्शन है जो सदियों से आज तक अपने सच्चे स्वरूप में कायम है। सिख दर्शन को अपनाने वाले जितने भी भगत साहिबान हुए हैं उन्होंने अपनी वाणी में उन महापुरुषों के नाम का जिक्र किया है जिन्होंने परमात्मा की भक्ति की और वे प्रसिद्धि को प्राप्त हुए। ऐसे महापुरुषों का नाम श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है और उनको परमात्मा का सच्चा भगत माना गया है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में ऐसे भक्तों का विशेष तौर पर उदाहरण देकर के गुरु साहिबान ने उनकी महिमा का मंडन किया है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में ऐसे भक्तों के नाम दर्ज हैं, जिनकी वाणी उपलब्ध नहीं है, लेकिन गुरबाणी उनको भगत मानती है।

जैसे ~ प्रहलाद, अम्बरीष, ध्रुव, वाल्मीकि, सुपाच, विदुर, सुदामा, पूतना, द्रोपदी, कुब्जा, गणिका, अजामल, सुकदेव, आदि।

लेकिन ब्राह्मणवादियों ने षडयंत्रपूर्वक परमात्मा के इन भगतों को विष्णु का भक्त लिखा है और प्रचारित किया है जबकि ये अकाल पुरख के सच्चे भक्त थे।

सिखी समानता का दर्शन है ~

सिख दर्शन में कोई ऊंच,नीच और अछूत नहीं होता है सब बराबर होते हैं यह दर्शन समानता का दर्शन है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 15 में गुरु नानक साहिब जी की वाणी है -

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥

गुरु नानक साहिब जी नीच जातियों में भी नीची जाति के साथ रहने की बात कहते हैं और गुरु नानक साहिब जी कहते हैं, जो बड़ी जाति के बने फिर रहे हैं, उनसे मुझे कुछ लेना देना नहीं है। क्योंकि जो कथित रूप से नीच कहे जाते हैं, अगर उसकी कोई सार सम्हाल करता है तो उस पर परमात्मा अपनी बख्शीश करता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 1106 पर भगत रविदास जी का शब्द दर्ज है

रागु मारू बाणी भगत रविदास जीउ की
॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्र धरै ॥१॥ रहाउ ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुही ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥१॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥२॥१॥

भगत रविदास जी कहते हैं जिस रविदास की छूत पूरे संसार को लगती थी हे! अकाल पुरख तूने कृपा करके मुझ नीच को ऊंच बना दिया, और इतना ही नहीं, उस अकाल पुरख ने अपनी कृपा करके नामदेव धोबी, कबीर जुलाहा, त्रिलोचन, सदना कसाई सेन नाई आदि को नीच से ऊंच बनाकर संसार सागर से पार करा दिया, और संसार को संसार सागर से पार कराने में समर्थ बना दिया।

आदि ग्रंथ की संपादना ~

सच्चे पातशाह श्री गुरु नानक साहिब जी ने उन सभी महापुरुषों की वाणी को संकलित किया जो सिख दर्शन का अभिन्न अंग थी।

गुरु अरजन साहिब जी ने मानवता, समानता, प्रेम, भाईचारे को कायम करने के लिए, छुआछूत ऊंच नीच और भेदभाव को मिटाने के लिए अपनी वाणी और गुरु नानक साहिब जी, गुरु अंगद साहिब जी, गुरु अमर दास जी ,गुरु रामदास जी की वाणी और 11 भट्ट, तीन सिख , 15 भगतों की वाणी एकत्रित करके आदि ग्रंथ की संपादना सन् 1604 में की थी।

जब यह बात ब्राह्मणवादियों और मुगलों को पता चली तो उन्होंने इस बात का बहुत विरोध किया और मुगलों और ब्राह्मणवादियों के द्वारा बहुत विरोध किया गया जिसकी गुरु श्री अरजन साहिब जी ने परवाह नहीं की।

ब्राह्मणों का विरोध था कि आदि ग्रंथ में नीच जाति के संतो की वाणी शामिल मत करो...

लेकिन गुरु साहिबान ने कथित रूप से नीच कहे जाने वाले कबीर जुलाहा, रविदास चमार, धन्ना जाट, नामदेव धोबी, सेन नाई, सदना कसाई, त्रिलोचन आदि की वाणी आदि ग्रंथ में शामिल करके एक सांझी विरासत तैयार की।

श्री गुरु अरजन साहिब जी ने उन सभी महापुरुषों की वाणी को आदि ग्रंथ में शामिल कर दिया जो परमात्मा को प्राप्त कर चुके थे और वे समानता मानवता और भाईचारे के पक्षधर थे...

कुल मिलाकर सच्चे पातशाह श्री गुरु अरजन साहिब जी ने अछूत, नीच, शूद्र कहे जाने वाले लोगों के लिए समानता, मानवता प्रेम और भाईचारे के द्वार आदि ग्रंथ की साजना करके खोल दिए...

श्री गुरु अरजन साहिब जी ने आदि ग्रंथ की संपादना के संबंध में एक शब्द उचारा है जो इस प्रकार है ~

वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥
अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥
जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥
हरिहाँ दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥२३॥

सच्चे पातशाह श्री गुरु अरजन साहिब जी कहते हैं कि सभी वेद और संतो की वाणी को एक साथ इकट्ठा कर दिया है। मनुष्य के अंदर के जो आंतरिक विकार हैं इन विकारों को दूर करने के लिए गुरु साहिबान ने डॉक्टरों की टीम इकट्ठी कर दी है। और संसारी जीवों को रोग रहित करने की गारंटी भी दी है क्योंकि इन डॉक्टरों (संतो) की टीम में परमात्मा भी शामिल है।

सच्चे पातशाह श्री गुरु अरजन साहिब जी ने सिख दर्शन की महानता,समानता और मानवता का जिक्र एक शब्द में किया है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 487 पर दर्ज है।

“गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥
- बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥१॥
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसन पाइआ ॥२॥
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥३॥
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥४॥२॥”

अर्थ ~ भगत नामदेव जी का मन परमात्मा के साथ लीन हो गया है जब भगत नामदेव जी परमात्मा में पूरी तरह से लीन हो गए हैं तो उनकी पहले कीमत कुछ भी नहीं थी जैसे ही वह परमात्मा की भक्ति में लीन हुए उनकी कीमत लाखों में हो गई। इसी प्रकार से भगत कबीर साहिब जी जो जुलाहे का काम करते थे नीचे कुल के कहे जाते थे जब उन्होंने माया मोह त्याग कर परमात्मा के चरणों में प्रीत लगाई तो वह गुणों का सागर बन गए।

इसी प्रकार से भगत रविदास जी जो मरे हुए पशुओं को ढोने का काम करते थे जब उन्होंने माया मोह त्याग कर संतों की संगति में लगकर के परमात्मा की भक्ति की तो उन्हें परमात्मा के दर्शन हुए। इसी प्रकार से सैन नाई जो नीच जाति के कहे जाते थे जब उन्होंने परमात्मा की भक्ति की तो उनकी वाणी को घर-घर सुना गया उनके हृदय में परमात्मा आकर बस गया और उनको परमात्मा का भक्त माना गया। इस प्रकार की भक्ति के बारे में सुनकर के धन्ना जाट जो नीच जाति के कहे जाते थे परमात्मा की भक्ति में आकर के लगे तो उन्हें परमात्मा प्रत्यक्ष तौर पर मिला और यह बहुत बड़े भाग्यशाली हुए।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 733 पर

गुरु रामदास जी का शब्द है जो स्पष्ट करता है गुरु का दर्शन समानता का प्रतीक है इस दर्शन को चाहे किसी भी जाति का व्यक्ति फॉलो करे वह उत्तम पदवी को प्राप्त करता है।

॥ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥
पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाइ ॥१॥
हरि की अकथ कथा सुनहु जन भाई जितु सहसा दूख भूख सभ लहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ॥
पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ॥२॥
नामदेव प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥

खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥३॥
जितने भगत हरि सेवका मुखि अठसठि तीरथ तिन तिलकु कढाइ ॥
जनु नानकु तिन कउ अनदिनु परसे जे क्रिपा करे हरि राइ ॥४॥१॥८॥

अर्थ - नीच जाति के लोगों ने परमात्मा के नाम का सिमरन करते हुए उत्तम पदवी को प्राप्त किया है। भगत विदुर जी जो दासी के पुत्र थे उन्होंने परमात्मा के नाम का सिमरन किया तो परमात्मा उनके हृदय में प्रकट हुआ। जो भी मनुष्य परमात्मा की कथानिया कथा को सुनते हैं उनके दुख भूख सब मिट जाते हैं। भगत रविदास जी जो चमार जाति के थे उन्होंने परमात्मा की स्तुति की, उन्होंने परमात्मा की कीर्ति को गाया वह नीच जाति के होने के बाद भी इतने उत्तम हुए कि चारों वर्णों के लोग उनके पैर पूजने लगे। भगत नामदेव जी जिनको लोग छीपा कह कर के बुलाते थे जब उन्होंने परमात्मा से प्रेम किया तो परमात्मा ने कथित रूप से ऊंच कहे जाने वाले क्षत्रिय और ब्राह्मणों को छोड़कर भगत नामदेव जी को अपने गले लगा लिया।

गुरु रामदास जी कहते हैं परमात्मा के जितने भी भक्त हैं जितने भी परमात्मा की सेवक हैं उनके उपदेशों में 68 तीर्थों का लाभ है, अगर परमात्मा कृपा कर दे तो मैं उनकी दिन-रात सेवा करूं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 833 पर गुरु रामदास जी का शब्द है जो स्पष्ट करता है कि गुरु का दर्शन जाति व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था का खत्म करके समानता स्थापित करने वाला है जी दर्शन को जो भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी वर्ण और जाति का हो अपना आएगा वह परमात्मा की प्राप्ति को करेगा।

शब्द -

अंडज जेरज सेतज उतभुज सभि वरन रूप जीअ जंत उपईआ ॥
साधू सरणि परै सो उबरै खत्री ब्राहमणु सूद वैसु चंडालु चंडईआ ॥६॥
नामा जैदेउ कंबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥
जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥७॥
संत जना की हरि पैज रखाई भगति वछलु अंगीकारु करईआ ॥
नानक सरणि परे जगजीवन हरि हरि किरपा धारि रखईआ ॥८॥४॥७॥

अर्थ ~ चारों खानियों के जितने भी जीव जंतु हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और चांडाल अगर यह संत जनों/गुरु साहिबान की शरण में आते हैं तो उनका पार उतारा हो जाता है।

भगत नामदेव जी, भगत जयदेव जी, भगत कबीर साहिब जी, भगत त्रिलोचन जी और चमार जाति के भगत रविदास जी, भगत धन्ना जाट जी यह भी गुरु की शरण में लग करके, संत जनों की संगति में लग करके परमात्मा को प्राप्त किए हैं और इनका पर उतारा हुआ है। संत जनों की परमात्मा इज्जत रखता है परमात्मा भक्तों के प्रति प्रेम लुटाने वाला और उनको हृदय से लगाने वाला है जो भी मनुष्य परमात्मा की शरण में जाता है तो जगत को जीवन देने वाला परमात्मा उसे पर अपनी कृपा करके उसकी रक्षा करता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 1124 पर भगत रविदास जी का शब्द है जो जाति और वर्ण व्यवस्था का खंडन करता है, इस शब्द में भगत रविदास जी कहते हैं, जो भी मनुष्य चाहे वह

किसी भी वर्ण और जाति का हो गुरु की शरण में लग कर परमात्मा की भक्ति करता है तो वह उत्तम पदवी को प्राप्त करता है।

रागु केदारा बाणी भगत रविदास जीउ की

॥ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥
चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥१॥
रे चित चेति चेत अचेत ॥
काहे न बालमीकहि देख ॥
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥१॥ रहाउ ॥
सुआन सत्र अजातु सभ ते क्रिस लावै हेतु ॥
लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥२॥
अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पासि ॥
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥३॥१॥

अर्थ - अगर कोई मनुष्य ब्राह्मण कुल का हो और वह नित्य 6 कर्मों को करता हो अगर उसके हृदय में परमात्मा की भक्ति नहीं है तो उसे परमात्मा के चरणों की कथा अच्छी नहीं लगती वह चांडाल के समान है।

अरे मन क्यों अचेत बना हुआ है होश में आ, वाल्मीकि की ओर क्यों नहीं देख रहा है कि वाल्मीकि किस जाति से थे और किस प्रकार से उन्होंने परमात्मा की भक्ति को किया और अमर पद को प्राप्त किया। वह कुत्तों को मारने वाला था सबसे हिंसक था उसने परमात्मा से प्रेम लगा लिया लोग भला उसे बेचार से की क्या प्रशंसा करेंगे उसकी कीर्ति तीनों लोक में फैल गई है। वेश्यगामी अजामल पिंगला शिकारी एवं कचर सभी संसार के बंधनों से छूटकर परमात्मा में विलीन हो गए हैं।

भगत रविदास जी जनमानस को उपदेश करते हैं कि जब ऐसी दुरमति वाले संसार से मुक्ति पा गए फिर परमात्मा का सिमरन करने से तू क्यों पार नहीं होगा ?

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 995

मारू महला ४ घरु २

॥ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपिओ नामु सुक जनक गुर बचनी हरि हरि सरणि परे ॥
दालदु भंजि सुदामे मिलिओ भगती भाइ तरे ॥
भगति वछलु हरि नामु क्रितारथु गुरमुखि क्रिपा करे ॥१॥
मेरे मन नामु जपत उधरे ॥
धू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥१॥ रहाउ ॥
कलजुगि नामु प्रधानु पदारथु भगत जना उधरे ॥
नामा जैदेउ कबीरु त्रिलोचनु सभि दोख गए चमरे ॥

गुरमुखि नामि लगे से उधरे सभि किलबिख पाप टरे ॥२॥
जो जो नामु जपै अपराधी सभि तिन के दोख परहरे ॥
बेसुआ रवत अजामलु उधरिओ मुखि बोलै नाराइणु नरहरे ॥
नामु जपत उग्रसैणि गति पाई तोड़ि बंधन मुकति करे ॥३॥
जन कर आपि अनुग्रहु कीआ हरि अंगीकारु करे ॥
सेवक पैज रखै मेरा गोविदु सरणि परे उधरे ॥
जन नानक हरि किरपा धारी उर धरिओ नामु हरे ॥४॥१॥

अर्थ - गुरु के वचन द्वारा सुखदेव एवं राजा जनक भी परमात्मा के नाम का जाप करते हुए परमात्मा की शरण में पड़े सुदामा की गरीबी दूर हुई और भक्ति भाव से उसका कल्याण हुआ। परमात्मा का नाम भक्त वत्सल एवं कृतार्थ करने वाला है। वह गुरमुखों पर ही कृपा करता है। हे मेरे मन ! परमात्मा के नाम को जाप कर कितने ही भक्तजनों का उद्धार हो गया है।

भक्त ध्रुव ,भक्त प्रहलाद ,दासी पुत्र विदुर गुरु के माध्यम से परमात्मा का नाम जप कर भवसागर से पार हो गए हैं। कलयुग में परमात्मा का नाम ही प्रधान है जिससे भक्तजनों का उद्धार हुआ है। भक्त नामदेव, भक्त जयदेव, भक्त कबीर और भक्त रविदास सबके दोष दूर हो गए हैं, जो मनुष्य गुरमुख बनकर परमात्मा के नाम के सिमरन में लीन होता है उसका कल्याण हुआ है, और उनके किलविख पाप नष्ट हो गए हैं। जिस जिस अपराधी ने परमात्मा के नाम का जाप किया उसके सब दोष समाप्त हो गए।

वैश्या के संग भोग करने वाला पापी अजामल का मुख से एक बार परमात्मा के नाम सिमरने से ही उद्धार हो गया, राजा उग्रसेन ने नाम जप करके परम गति को प्राप्त किया, परमात्मा ने उसके सारे बंधन तोड़कर उसकी मुक्ति प्रदान की। परमात्मा ने स्वयं ही अपने भक्तों पर कृपा की है। और उनका साथ दिया है मेरा परमात्मा सदा अपने सेवकों की लाज रखता है और उसकी शरण में आने वाले का उद्धार हुआ है।

गुरु साहिबान कहते हैं कि जिसने परमात्मा के नाम को अपने हृदय में धारण किया है उस पर परमात्मा ने कृपा की है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 1192
बसंतु महला ५ घरु १ दुतुकीआ १४
॥ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
सुणि साखी मन जपि पिआर ॥
अजामलु उधरिआ कहि एक बार ॥
बालमीकै होआ साधसंगु ॥
धू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥१॥
तेरिआ संता जाचउ चरन रेन ॥
ले मसतकि लावउ करि क्रिपा देन ॥१॥रहाउ ॥
गनिका उधरी हरि कहै तोत ॥

गजइंद्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥
बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥
रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥२॥
बधिकु उधारिओ खमि प्रहार ॥
कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥
बिदरु उधारिओ दासत भाइ ॥
रे मन तू भी हरि धिआइ ॥३॥
प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥
बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥
जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥
रे मन सेवि तू परहि पार ॥४॥
धंनै सेविआ बाल बुधि ॥
त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥
बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥
रे मन तू भी होहि दासु ॥५॥
जैदेव तिआगिओ अहंमेव ॥
नाई उधरिओ सैनु सेव ॥
मनु डीगि न डोलै कहूं जाइ ॥
मन तू भी तरसहि सरणि पाइ ॥६॥
जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥
से तैं लीने भगत राखि ॥
तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥
इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥७॥
कबीरि धिआइओ एक रंग ॥
नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥
रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥
गुर नानक देव गोविंद रूप ॥८॥१॥

अर्थ - हे मन ! प्रेम से शिक्षाओं को सुनकर जाप कर केवल एक बार नारायण का उच्चारण करने से अजमल का उद्धार हो गया। वाल्मीकि को साधुओं की संगति प्राप्त हुई तो वह पार हो गए।भक्त ध्रुव को दर्शन देकर ईश्वर प्राप्त हुआ। हे प्रभु! मैं तेरे संत जनों की चरण रज चाहता हूं इसे लेकर माथे पर लगाऊं कृपा करके मुझे संत जनों की चरणरज प्रदान करो। तोते को हरी नाम का पाठ करवाती हुई वैश्या का उद्धार हो गया। हाथी ने ध्यान किया तो परमात्मा ने उसे मगरमच्छ से मुक्त करवाया। परमात्मा ने ब्राह्मण सुदामा की गरीबी को दूर किया। हे मन तू भी परमात्मा का भजन कर। श्री कृष्ण के पैर पर तीर से प्रहार करने वाले शिकारी का उद्धार किया।

अंगूठे के स्पर्श मात्र से ही कुब्जा का उद्धार हो गया। सेवा भाव के कारण विदुर का पार उतारा करा दिया। हे मन ! तू भी परमात्मा का ध्यान कर ईश्वर ने स्वयं अपने प्रिय भक्त प्रहलाद की लाज रखी। जब कौरवों की सभा में द्रोपती के वस्त्रो का हरण किया जा रहा था तो ईश्वर ने ही लाज बचाई। जिस जिस ने भी मुसीबत के समय परमात्मा के नाम का सिमरन किया उसे मुक्ति प्राप्त हुई। हे मन तू परमात्मा के नाम का सिमरन कर तेरा भी संसार सागर से पार उतारा हो जाएगा। धन्ना भगत जी भोले भाले बाल बुद्धि के थे ने परमात्मा की अर्चना की तो परमात्मा को पा लिया। त्रिलोचन ने गुरु से मिलकर सफलता प्राप्त की। बेनी को गुरु ने सत्य का ज्ञान प्रदान किया। हे मन ! तू भी परमात्मा का दास बन जा।

जयदेव ने अहम भावना को त्याग दिया और सैन नाई भी परमात्मा की सेवा कर संसार सागर से पर उतर गया , भक्त सेन का मन विचलित नहीं हुआ और ना ही डगमगाए। हे मन ! तू भी ईश्वर की शरण की लालसा कर। हे ठाकुर ! जिस पर तूने कृपा की है उन भक्तों को तूने स्वयं बचा लिया है उनके गुण अवगुण की ओर तनिक ध्यान नहीं दिया इस तरह देखकर यह मन भी ईश्वर की भक्ति में लग गया है। भक्त कबीर ने प्रेम पूर्वक ईश्वर का ध्यान किया। और नामदेव के साथ परमात्मा बस रहा। रविदास ने भी प्रभु का ध्यान किया गुरु साहब कहते हैं गुरु नानक देव जी परमात्मा का सिमरन करते हुए परमात्मा स्वरुप हुए हैं।

आदि ग्रंथ की संपादना के बाद श्री अरजन साहिब जी की लोकप्रियता पूरे देश में फैल गई कि गुरु अरजन साहिब जी ने सबके लिए ऐसा ग्रंथ बनाया है, जहां किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है, छुआछूत नहीं है। इसकी वजह से सभी जातियों के लोग, सभी धर्मों के लोग गुरु साहिबान के सिख बनने लगे। जिसे ब्राह्मणवादियों ने अपने लिए बहुत बड़ा खतरा समझा। इसी कारण से पम्मा और बीरबल ने गुरु साहिबान के प्रति जहांगीर को भड़काया था लेकिन गुरु साहिबान ने अपना काम सफलता पूर्वक सम्पन्न कर लिया। ब्राह्मणवादियों के भड़काने के परिणामस्वरूप 30 मई 1606 में सच्चे पातशाह श्री गुरु अरजन साहिब जी को कठोर यातनाएं देकर ब्राह्मणवादियों के द्वारा शहीद करवा दिया गया।

इसके बाद गुरु गद्दी पर छठवें पातशाह गुरु श्री हरगोबिंद साहेब जी विराजे जिन्होंने शस्त्र रखना, सेना रखना शुरू किया।

सिख दर्शन समानता के लिए क्रांति है ~

ब्राह्मणवादियों ने क्षत्रिय राजे और मुगलों को गुरु साहिबान से लड़ने को भड़काया था तब क्षत्रिय राजे और मुगलों ने गुरु साहिबान को अछूतों और शूद्रों को अपना सिख बनाने से रोका था,

और मुगल बादशाहों और हिंदू राजाओं ने गुरु साहिबान से कहा था कि हम आपके सिख बनेंगे आपको धन दौलत देंगे आप जो कहोगे सो करेंगे लेकिन आप शूद्रों अछूतों को बराबरी मत दो, उन्हें अपना सिख मत बनाओ ???

तब गुर साहिबान ने स्पष्ट कहा कि हमारा ये मिशन है हम शूद्र और अछूतों को अपना सिख बनाएंगे और उनके साथ बराबरी का व्यवहार करेंगे, हम तो आपके साथ भी बराबरी का व्यवहार

करेंगे। हमारे लिए सब एक हैं मनुष्य परमात्मा की संतान है कोई शूद्र और अछूत नहीं है। यदि आप लोगों को ये बात स्वीकार है तो ठीक है, यदि आप लोगों को ये स्वीकार नहीं है तो हमें भी आप लोगों की बात स्वीकार नहीं हैं।

ब्राह्मणवादियों का गुरु साहिबान से लड़ने का मूल कारण ~

गुरु साहिबान के द्वारा ब्राह्मणवादियों की चतुवर्णीय जातीय आतंकवाद, छुआछूत, ऊंच नीच जोर जुल्म का विरोध कर भारत के दबे कुचले लोगों को अपना सिख बनाना, ब्राह्मणवादियों के अनुसार नीच लोगों को गुरु साहिबान ने साथ में बैठकर एक पंगत में लंगर छकाया, एक संगत में बैठाकर उपदेश दिया ब्राह्मणवादियों की अमानवीय व्यवस्था में जिन लोगों को जानवर से भी बदतर समझा जाता था गुरु साहिबान ने उनको अपना बेटा बनाया और उनको अपने गले से लगाया।

जिन लोगों को अच्छे कपड़े पहनने पर रोक थी, गुरु साहिबान ने उन्हें अच्छे कपड़े पहनने का अधिकार दिया। जिन लोगों को सिर पर पगड़ी बांधने पर रोक थी गुरु साहिबान ने उन्हें सिर पर दोमाला (दो पगड़ी) सजवाया। जिन लोगों को घोड़ों पर चढ़ने की मनाही थी उन्हें गुरु साहिबान ने घोड़ों पर चढ़ने का अधिकार दिया। जिन लोगों को हथियार रखने पर मनाही थी गुरु साहिबान ने उन्हें हथियार रखने का अधिकार दिया। फौज में सैनिक केवल ड्यूटी के समय हथियार धारण कर सकता है लेकिन गुरु साहिबान ने अपने सिखों को 24 घंटे हथियार रखने का अधिकार दिया। जिन लोगों के साथ गैर बराबरी का व्यवहार होता था गुरु साहिबान ने उन्हें बराबरी का दर्जा दिया। जिन लोगों के नाम भद्दे और अपमानजनक होते थे उनके नाम गुरु साहिबान ने उनके अच्छे नाम रखे और नाम के साथ सिंघ लगाया और महिलाओं के नाम के साथ कौर लगाया। जिन लोगों को ब्राह्मण पानी पीने से रोकता था उन लोगों को गुरु साहिबान ने अमृत छकाया। ब्राह्मणवादियों ने जिन लोगों को हथियार विहीन बनाया गुरु साहिबान ने उन्हें हथियारों से सुसज्जित कर योद्धा बनाया। जिन लोगों को ब्राह्मणवादी दाढ़ी और मूंछ नहीं रखने देते थे गुरु साहिबान ने उन्हें दाढ़ी मूछ और पूर्ण केस रखने का अधिकार दिया। जो लोग ब्राह्मणवादियों के गुलाम थे गुरु साहिबान ने उन अछूतों और शूद्रों को ब्राह्मणवादियों की गुलामी से आजाद कराया।

गुरु साहिबान ने कहा था~

जिनकी जात पांति कुल माही।
सरदारी न भई कदाहीं।।
तिनिको ही सरदार बनाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहांऊ।।

दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंघ साहेब जी ने यह बात बहुत ही दृढ़ निश्चय से कही और करके दिखाई.....। ब्राह्मणवादियों की अमानवीय व्यवस्था में जिन लोगों को कीड़े मकोड़ों की तरह तुच्छ समझा जाता था उनके लिए गुरु साहिबान ने दृढ़ निश्चयवान होकर कहा था~

चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊं,
गीदड़ों को मैं शेर बनाऊं।

सवा लाख से एक लड़ाऊं,
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊँ।।
गुरु साहिबान ने जैसा कहा हकीकत में वैसा ही करके दिखाया।
दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी ने 13 अप्रैल 1699 को खालसा की साजना की....
गुरु साहिबान ने अमृत छकाने की परंपरा की शुरुआत की, गुरु साहिबान ने अपने सभी सिखों को एक ही खंडे बाटे से अमृत छकाकर सिंघ सजाकर हथियार बंद योद्धा बनाया।
इन योद्धाओं की फौज का नाम खालसा दिया।
खालसा मतलब पवित्र ! सच्ची सरकार के बंदे !
गुरु साहिबान ने सिखों के नाम के साथ पुरुष है तो सिंघ और महिला है तो कौर टाइटल दिया।
गुरु साहिबान ने अमृत उन्हीं को छकाया जो गुरु साहिबान के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे गुरु साहिबान को अपना शीश देने के लिए तैयार थे।
जे तउ प्रेम खेलन का चाव,
सर धर तली गली मेरी आउ।
नित मार्ग पर पैर धरीजे,
सिर दीजे पर कान न कीजे।
गुरु साहिबान ने सबसे पहले पांच सिखों को अमृत छकाया जिन्हें पंच प्यारों के नाम से जानते हैं। ये पंच प्यारे देश के अलग अलग इलाकों और अलग अलग जातियों से थे।
जब पंच प्यारों ने गुरु साहिबान के हाथों से अमृत छक लिया तब गुरु साहिबान ने उन पंच प्यारों से विनती की आप अब मुझे भी अमृत छकाओ ये धर्म के इतिहास में यह एक इंकलाबी कदम था कि एक धर्म गुरु ने अपने चेलों को गुरु मानकर अमृत की दात मांगी।
तब पंच प्यारों ने दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंघ साहेब जी को अमृत छकाया,
और आज भी पंच प्यारों के द्वारा अमृत उन्हीं को छकाया जाता है जो गुरु साहिबान के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होते हैं और गुरु साहिबान को अपना शीश देने के लिए तैयार होते हैं। अमृत छकाने की प्रक्रिया नाश के सिद्धांत पर आधारित है। अमृत छकने वाला सिख गुरु साहिबान को अपना शीश देने का संकल्प ले चुका होता है, तब गुरु साहिबान उस सिख को नया जीवन देते हैं। और जो सिख अमृत छक लेता है उसकी जाति, वर्ण, कुल, गौत्र के साथ साथ माता पिता और नाम की भी पहचान खत्म हो जाती है। पंच प्यारों के द्वारा अमृत छकने वाले सिख को नया नाम दिया जाता है। और उसे हुकुम दिया जाता है कि आज से तुम्हारी जाति, वर्ण, कुल, गोत्र सारी पहचान खत्म आज से तुम खालसा हो तुम्हारे पिता सतगुरु गोबिंद सिंघ साहेब जी हैं, माता साहिब कौर हैं। और खालसा तुम्हारा परिवार है और तुम आंनदपुर साहिब के निवासी हो।
एक माता-पिता एक जन्म स्थल और सब एक परिवार फिर उच्च नीच अपने पराये का भेद खत्म कर दिया।
गुरु साहिबान ने सिखों की जाति ,कुल, गोत्र ,वर्ण का विनाश कर दिया।

जाति के विनाश (एनहेलेशन ऑफ कास्ट) का इतना बड़ा महान सिद्धांत और प्रैक्टिकल दुनिया में कहीं भी नहीं मिलेगा...

गुरु साहिबान ने कहा है -

जिनकी जात और कुल माहीं, सरदारी ना भई किदाही।
तिनही को सरदार बनाऊँ, तबै गोबिन्द सिंघ नाम कहाऊं।
गुजर, लुहार, अहीर, कमजात, कंबो शुद्र, ना को पुछे बात।
झीवर, नाई और रोड़े, घूमिआर, सैणी, सुनिआरे, चुहड़े चमिआर।
भट ओ ब्राह्मण, हुते मंगवार, बहुरूपीऐ, लुबाणे, और घुमिआर।
इन गरीब सिखन को दै पातशाही, याद करें हमरी गुरिआई।

वर्तमान में सिखों की प्रैक्टिस में गिरावट हो सकती है लेकिन गुरु साहिबान के सिद्धांत, विचारधारा परफेक्ट है, सिखी परफेक्ट है। सिख सिद्धांत सर्वदेशीय और सर्वकालिक है। जिसके द्वारा सिख अपनी प्रैक्टिस को सुधार सकते हैं।

गुरु साहिबान की महानतम कुर्बानी~

दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंघ साहेब जी ने परिवार सहित आनंद पुर साहिब का किला छोड़ा। गुरु साहिबान अपने दोनों बड़े पुत्रों सहित चमकौर के मैदान में पहुंचे और गुरु साहिब की माता और छोटे दोनों साहिबजादों को गंगू नामक ब्राह्मण जो कभी गुरु घर का रसोइया था उन्हें अपने साथ अपने घर ले आया। चमकौर की जंग शुरू हुई और दुश्मनों से जूझते हुए गुरु साहिब के बड़े साहिबजादे अजीत सिंघ उम्र महज 17 वर्ष और छोटे साहिबजादे जुझार सिंघ उम्र महज 14 वर्ष अपने अन्य साथियों सहित दुश्मन से लड़ते हुए शहीद हुए। गुरु साहिबान की माता गुजर कौर जी और दोनों छोटे साहिबजादे गंगू ब्राह्मण के द्वारा गहने एवं अन्य सामान चोरी करने के उपरांत तीनों को मुखबरी कर मोरिंडा के चौधरी जानी खां और मानी खां के हाथों गिरफ्तार करवा दिया गया और तीनों को सरहिंद पहुंचाया गया और वहां ठंडे बुर्ज में नजरबंद किया गया और अत्याचार किए। छोटे साहिबजादों को नवाब वजीर खान की अदालत में पेश किया गया और उन्हें धर्म परिवर्तन करने के लिए लालच दिया गया और धर्म न बदलने पर मौत का डर भी दिया गया। ये अति हैरानी की बात है कि साहिबजादों की उम्र 7और 9 साल होने के बाबजूद भी उन्होंने किसी लालच और भय के कारण अपना धर्म नहीं त्यागा।

साहिबजादा जोरावर सिंघ और साहिबजादा फतेह सिंघ को तमाम जुल्म ओ जब्र उपरांत जिंदा दीवार में चुनने उपरांत जिबह (गला रेत) कर शहीद किया गया और माता गूजर कौर जी को शहीद किया गया। इतनी बड़ी महान कुर्बानी दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंघ साहिब जी ने भारत के अछूतों और शूद्रों को आजाद कराने के लिए दी थी। गुरु साहिबान ने दुश्मन से कभी भी समझौता नहीं किया। दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंघ साहिब जी ने मानवता के दुश्मनों के खिलाफ 18 जंगे लड़ी जिनमें से केवल चार जंगे मुगलों के खिलाफ थी।

गुरु साहिबान से ब्राह्मण के कहने पर लड़ने वाले क्षत्रिय राजे `

हिन्दू राजा केहलूर की फौज, हिन्दू राजा बड़ोली की फौज, हिन्दू राजा कसौली की फौज, हिन्दू राजा कांगड़ा की फौज, हिन्दू राजा नदौन की फौज, हिन्दू राजा नाहन की फौज,
हिन्दू राजा बुड़ैल की फौज, हिन्दू राजा चंबा की फौज, हिन्दू राजा भम्बोर की फौज,
हिन्दू राजा चंबोली की फौज, हिन्दू राजा जम्मू की फौज, हिन्दू राजा नूरपुर की फौज
हिन्दू राजा जसवाल की फौज, हिन्दू राजा श्रीनगर की फौज, हिन्दू राजा गड़वाल की फौज
हिन्दू राजा हिंगडोर की फौज, हिन्दू राजा मंडी की फौज, हिन्दू राजा भीमचंद की फौज
इन 22 धार के हिंदू राजाओं की फौज की अगुवाई भीम चंद कर रहा था, यह भीम चंद उनमें से था जिसके दादा राजा तारा चंद को गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने ग्वालियर के किले से और 51 राजाओं के साथ छुड़वाया था। गुरु साहिबान के खिलाफ पहाड़ी राजाओं को और मुगलों को ब्राह्मणवादियों ने खड़ा किया था, पहाड़ी राजा और ब्राह्मणवादी, गुरु साहिबान को यह कह रहे थे कि इन अछूतों और शूद्रों को लंगर मत छकाओ, इनको अपना सिख मत बनाओ और न ही इनको अमृत मत छकाओ। हम आपका हर तरीके से सहयोग करेंगे लेकिन गुरु साहिबान ने मानवता के दुश्मनों की एक नहीं सुनी और ना ही उनसे कोई समझौता किया।
जब दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह साहेब जी पंजाब में जुल्म के राज को समाप्त करने और धर्म का राज स्थापित करने के लिए बाबा बंदा सिंह बहादुर जी को भेजा तो उन्होंने बाबा बंदा सिंह बहादुर जी को पांच तीर, एक नगाड़ा, एक निशान साहिब और 20 सिखों को पंच प्यारों की अगुवाई में भेजा।
यह दुनिया के लिए बहुत ही आश्चर्यजनक और करामात वाली बात है कि भारत देश पर काबिज और दुनिया की एक सबसे बड़ी सल्तनत के विरुद्ध इतनी कम संख्या में कोई सेना चल पड़ी हो, यह करामात एक सर्व समर्थ गुरु और उस गुरु पर पूर्ण भरोसा रखने वाले सिख ही कर सकते हैं। पंजाब में आकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर जी ने तकरीबन 700 साल पुरानी सल्तनत को जड़ से उखाड़ फेंका और खालसा राज की नींव रखी। दिलचस्प बात यह है कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर जी ने अपने राज में सिक्के और मोहरे चलाई तो गुरु नानक साहिब जी और गुरु गोबिंद सिंघ साहेब जी के नाम पर चलाई , न कि दूसरे राजाओं की तरह अपने नाम पर !
इतिहास में यह भी पहली बार हुआ कि बाबा बंदा सिंह बहादुर ने हलवाहे किसानों और मजदूरों को जमीन के मालिकाना हक दिए जिस पर बड़े-बड़े जमींदार कब्जा किए हुए थे और उनसे गुलामों की तरह बंधुआ मजदूरों की तरह काम करवाते थे।
सिख गुरु साहिबान ने उन समस्त महापुरुषों की वाणी को संकलित किया जिन्होंने परमात्मा को प्राप्त किया था। उन सभी की वाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में इकट्ठा करके एक सांझी विरासत तैयार की , जिससे देश में आपसी प्रेम और भाईचारा बड़ा, थोड़े ही समय में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के नेतृत्व में बाबा बंदा सिंघ बहादुर जी और सिख सूरमाओं ने पिछले 800 सालों की गुलामी को उतार कर फेंक दिया और खालसा राज की स्थापना की।
इस देश के शूद्र और अछूतों की हालत के बारे में एक अंग्रेज लेखक लिखता है जब कोई भंगी या चमार जिनको ब्राह्मणवादी व्यवस्था में नीच समझा जाता था बाबा बंदा सिंह बहादुर जी के पास

जाता था तो वहां से वह सरदार और जमींदार बनकर के लौटता था फिर अन्य लोग उसको भारी सत्कार देते थे, भारी इज्जत देते थे।

इस तरह से बाबा बंदा सिंह बहादुर जी ने समानता और बराबरता के महान मिशन को प्रचारित और प्रसारित किया और देश में खालसा राज कायम किया। लेकिन विडंबना यह है। भारत के दलित अछूत शूद्र इस महान क्रांति से वाकिफ नहीं हैं।

भारत के दलित और अछूत, शूद्र डॉ भीमराव अंबेडकर के उस भाषण को (एन्हेलेशन ऑफ कास्ट) जिसे जाति पात तोड़क मंडल ने रिजेक्ट कर दिया था उसे क्रांति समझ रहे हैं। यह उनकी नादानी है।

जाति पांत का असली विनाश तो खालसा सजने पर ही हो सकता है।

अब हमारी जिम्मेदारी है कि हम पूरे देश को इस महान क्रांति से और महान फिलासफी से और महान इतिहास से अवगत कराएंगे~

तभी भारत जाति विहीन समाज बनेगा। तभी भारत वर्ण विहीन समाज बनेगा।

तभी हमारा भारत देश आजाद होगा। तभी भारत में समानता स्थापित होगी।

तभी भारत में मानवता स्थापित होगी। तभी भारत में भाईचारा स्थापित होगा।

तभी भारत से अन्याय,अत्याचार का खात्मा होगा। तभी भारत में छुआछूत ऊंच-नीच का खात्मा होगा। तभी भारत के अछूतों, शूद्रों और दलितों की आजादी का मार्ग प्रशस्त होगा।

इसके लिए **अमृत छको! सिंघ सजो !!**

हमारे गुरु साहिबान ने और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में जिन महापुरुषों की वाणी दर्ज है उनके द्वारा कायम किए गए आदर्शों को फॉलो करना हमारा फर्ज है, जिम्मेदारी है और कर्तव्य है, ताकि हम गुरु साहिबान के आदर्शों का बेगम पुरा राज कायम कर सकें।

भगत बराबर अउर न कोए ~

पंजाब में ब्राह्मणवादी और ब्राह्मणवादियों के गुलामों ने दुष्प्रचार किया है कि सिख भगत रविदास साहेब को भगत कहते हैं। और गुरु साहिबान को गुरु कहते हैं, और पंजाब के वे रविदासिया इस बात का दुष्प्रचार ज्यादा कर रहे हैं जो भोले भाले हैं। और भोले भाले लोग शातिर लोगों के दुष्प्रचार में फंस जाते हैं। उनका सीधा आरोप होता है कि जट हमारे सतगुरू रविदास साहेब को भगत बोलते हैं, ये आरोप उनका निराधार और सरासर ग़लत है, क्योंकि जट भगत धन्ना साहेब को गुरु नहीं भगत ही बोलते हैं। दरअसल भगत शब्द बहुत ऊंचा शब्द है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में छः गुरु साहिबान की वाणी दर्ज है, गुरु साहिबानों की वाणी पढ़ते हैं तो गुरु साहिबान अकाल पुरख से अरदास करते हैं कि हे ! वाहेगुरु मुझे अपने भगतों के चरणों की धूलि मुझे प्रदान कर, हे! अकाल पुरख मुझे तू अपने भगतों का दास बना दे, हे! अकाल पुरख तू मुझे अपनी भगति प्रदान कर, यदि गुरु साहिबान परमात्मा के भगतों के ऐसा बोलते हैं तो भगत का दर्जा गुरु से छोटा कैसे हो गया.....

चरणों की धूलि तो उसी की मांगी जाती है जो पूजनीय हो, सत्कार के योग्य हो, महान हो...

जितने भी गुरु साहिबान हैं वे भी परमात्मा के सच्चे भगत हैं, वे परमात्मा के भगत पहले हैं गुरु बाद में, और किसी भी गुरु साहिबान ने देहधारी गुरु को गुरु नहीं माना है। गुरु साहिबान अपना गुरु मानते हैं शब्द को।

शब्द गुरु सुरति धुन चेला ....

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में जितने भी महापुरुषों की वाणी दर्ज है वह गुरु वाणी है। जिन्होंने भी ये वाणी उचारी है वे सभी परमात्मा से मिले हुए परमात्मा के सच्चे भगत हैं।

भगत रविदास जी कहते हैं कि~

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पन्ना 858,भगत रविदास जी की वाणी)

"पंडित सूर छत्रपति राजा, भगत बराबर अउर न कोए ॥"

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना नंबर 1394 पर गुरु अमरदास जी ने स्वयं को भगत कहा है।

"तै लोभु क्रोधु त्रिसना तजी सु मति जल जाणी जुगति॥

गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु पावउ मुकति ॥४॥१३॥

इसी प्रकार से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पन्ना नंबर 1407 पर गुरु अरजन साहेब जी को भगत कहा गया है।

"गुर नानक अंगद अमर लागि उतम पटु पायउ ॥

गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ ॥१॥"

गुरु रामदास जी के घर गुरु अरजन साहेब जी का जन्म भगत के रूप में हुआ।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पन्ना नंबर 1385

"जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥"

गुरु साहिबान कहते हैं भगत की तुलना परमात्मा से ही की जा सकती है, भगत के बराबर परमात्मा के दर पर और कोई नहीं है। भगत की महानता का बखान एक जीभ से कैसे किया जा सकता है।

सिख धर्म के बारे में विभिन्न विद्वानों के विचार ~

अमेरिका के धर्म चिंतक **एच.एल.ब्रोडॉशा** ~ जिन्होंने विश्व के 500 भिन्न-भिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात सिख धर्म की सर्वश्रेष्ठता को इस तरह बयान करते हैं "सिखी एक सर्वव्यापक अथवा संपूर्ण विश्व धर्म है जो मानव मात्र को समान संदेश देता है। इस बात की गुरबाणी में भरपूर व्याख्या की गई है। सिखों को इस तरह सोचना बंद कर देना चाहिए कि सिखी एक और अच्छा धर्म है बल्कि इसके विपरीत इस तरह सोचना चाहिए कि सिख धर्म ही नए युग का धर्म है।..... श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रचारित धर्म ही नए युग का धर्म है यह पूर्ण तौर पर पुराने मतों का स्थान लेता है इस बात को सिद्ध करने के लिए पुस्तक लिखनी चाहिए और धर्म सच्चाई रखते हैं पर सिख धर्म सच्चाई से भरपूर है।"

"सच्चाई यह है कि सिख धर्म वर्तमान मनुष्य की सब समस्याओं का एकमात्र हल है।"

मिस पर्ल एस. बक लिखती हैं ~ "मैंने और भी धर्म के ग्रंथ पढ़े हैं परंतु मुझे और कहीं भी मन और दिल को स्पर्श करने वाली वह हृदय स्पर्शी शक्ति नहीं मिली जो श्री गुरु साहिब जी में से प्राप्त हुई है।"

एच.सी. पेन ~ सिख धर्म को जनसाधारण का धर्म कहता है :-

"अमली धर्म गुरु नानक देव जी ने दर्शाया उन्होंने मुसलमान हिंदुओं किसने दुकानदारों सिपहिया गृहस्थियों को अपने कामकाज करते हुए कामयाबी प्राप्त करने का रास्ता दिखाया गुरु नानक साहिब थोथी फिलोसॉफियों रस्म रिवाजों जातियों से ऊंचा उठ और लोगों को भी इन (सारहीन फिलोसॉफियों) से ऊंचा उठाया।"

डंकन ग्रीन लीज सिख धर्म को "उत्तम जीवन पद्धति" और इसकी विचारधारा पर आधारित समाज को "आदर्श भाईचारे" का नाम देता है।

सिख धर्म की महानतम विशेषताएं __

शब्द गुरु की अगुवाई~ सिख धर्म ने शब्द को ही गुरु कहा है जिसका भाव है कि वह ज्ञान जो गुरु साहिबान को परमात्मा के साथ मिलने के बाद प्राप्त हुआ इस ज्ञान को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में संकलित किया गया है। गुरु नानक साहिब जी ने बहुत स्पष्ट करके लिखा है शब्द ही गुरु है इसके बिना संसार के लोग अज्ञानी बने रहते हैं कष्ट उठाते हैं पर शब्द का दामन पड़कर वे संसार सागर तैर जाते हैं और अपना जीवन सफल कर लेते हैं :--

पवन अरंभु सतिगुर मति वेला।।

शब्द गुरु सुरति धुनि चेला।। (रामकली महला 1 सिध गोष्ट पन्ना नंबर 635)

नाम सिमरन के द्वारा आचरण का निर्माण~ सिख धर्म में नाम सिमरन पर बहुत जोर दिया गया है जिसका अर्थ है प्रभु की बढाई करना उसके गुणों का गायन करना। गुरु साहिबान ने जहां नाम सिमरन द्वारा मनुष्य के चरित्र को ऊंचा व पवित्र बनाया और आत्मिक रूप से बलवान किया वहां ऐसे मनुष्यों का आज ऐसा समाज सृजित किया है जो अकाल पुरुष के गुणों से भरपूर था जिसने हर तरह की गुलामी अथवा डर जैसा कि धार्मिक कर्मकांड और अंध विश्वासों और पुजारी वर्ग की गुलामी , समाज को सामाजिक गुलामी और अत्याचारी राजाओं की गुलामी से दूर निकाल दिया। निर्भय और निरबैर लोगों के इस समाज ने हजारों सालों की गुलामी से मुक्ति पाई और अपना राज्य कायम कर लिया। बुजदिलों में से बढ़िया योद्धा और जंगी जनरल पैदा हुए और सदियों से गुलामी का जीवन बसर करने वालों में से आदर्श शासक पैदा हुए यह सब नाम सिमरन की ही करामात तो है।

जीवन मुक्ति का सिद्धांत~ सिखी के प्रकाश से पहले कई धर्मों ने मुक्ति का सिद्धांत दिया था पर वह मौत के पश्चात मुक्ति के सिद्धांत में विश्वास रखते थे या फिर नर्कों के डरावे और स्वर्गों के लालच दिए जाते थे सिख धर्म ने लोक और परलोक दोनों में मुक्ति के सिद्धांत को प्रचार किया, जीते जी मुक्ति की बात की।

ब्राह्मणवादी धर्म और कर्मकाण्डों का विरोध :-

भारतीय समाज में, धर्म के क्षेत्र में, ब्राह्मणों (पंडितो) का सदियों से बोलबाला रहा है। स्मृतियों और शास्त्रों ने ब्राह्मणों को भारतीय समाज में सर्वोत्तम स्थान दिया हुआ था और धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने-पढ़ाने व और सारे कर्म-धर्म करने का इनको ही अधिकार था। इन लोगों ने धर्म के नाम पर ऐसे विश्वास, रीतियां-रस्में तथा कर्म-कांड प्रचलित किए हुए थे कि बिना कोई उधम किए ही ये सारी उम्र बड़ी सरलता से गुज़ार सकते थे।

ब्राह्मण वेदों, स्मृतियों, शास्त्रों और पुराणों की विचारधारा के प्रचारक थे, जिसके कारण ये मंत्रों के *रटन, अवतारों की पूजा, देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा, कुदरती शक्तियों (सूरज, अग्नि,* वरुण आदि पशुओं (गाय, कछुआ, साँप, स्वान, मगरमच्छ) की पूजा, वृक्षों (पीपल, बबूल, तुलसी, नीम) की पूजा, शिवलिंग की पूजा करवाते थे। पवित्र-अपवित्र, सूतक-पातक, चौके की शुद्धि व्रत, अच्छे और बुरे दिनों का वहम, तीर्थों की यात्रा और तीर्थ-स्नान नर्क-स्वर्ग के विचार, भूत-प्रेतों में निश्चय, ग्रहों की पूजा, समाधियों की पूजा, जात-पात (वर्ण-भेद), आश्रम धर्म (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्यास) आदि ब्राह्मणवादी विचारधारा के अलग-अलग अंग है। इसके सिवाय ब्राह्मण मुहूर्त निकालते, यज्ञ करवाते, मनुष्य के जन्म, नामकरण, धर्म-प्रवेश (जनेऊ संस्कार) ब्याह, मौत और मौत के बाद "धर्म-कर्म" करते और ब्याह और दान-पुण्य लेते थे। ये विशेष धार्मिक भेष धारण करते थे, जिसमें दो धोतियां सिर पर कपड़ा, जनेऊ धारण करना, कई तरह के तिलक लगाने, गले में माला और शालिग्राम लटकाना आदि शामिल थे।

गुरु-पातशाह और निर्गुण भक्ति-धारा के भगतों ने ब्राह्मणों की सरदारी को चुनौती दी और उसकी विचारधारा, धार्मिक भेष, कर्म-कांडों और दान-पुण्य के खोखलेपन को लोगों के सामने जाहिर किया।

गृहस्थियों का धर्म :- सिख धर्म के प्रकाश के समय त्यागवाद, जिसको हम दूसरे अर्थों में पलायनवाद कहेंगे, का बहुत ज़ोर था। तब यह प्रचार किया जाता था कि संसार में माया का बोलबाला है। जो मनुष्य को धर्म और ईश्वर से दूर ले जाती है। इसलिए संसार में रहकर रब की भक्ति नहीं हो सकती। भक्ति के लिए बस्ती से दूर जंगलों और पर्वतों पर जाना चाहिए। उन्हीं विचारों का प्रचार योगी, हिन्दू, साधक, बोद्धि और जैनी सभी कर रहे थे। जिसके असर के कारण भक्ति करने के इच्छुक जंगलों, पहाड़ों, नदियों के किनारों या तीर्थ-स्थाना-पर जा डेरे लगाते थे। ये लोग आम संसारियों को माया-जाल में फँसे हुए और निम्न स्तरीय जीवन गुज़ार रहे बताते थे।

गुरु साहिबान ने त्यागवाद का सख्त विरोध किया। गुरु नानक देव जी ने पहाड़ों और जंगलों जा के योगियों तथा अन्य त्यागियों को समझाया कि प्रभु भक्ति के लिए संसार त्यागने की ज़रूरत नहीं बल्कि मन पर काबू पाकर काम, - क्रोध, लोभ, अहंकार तथा अन्य विकारग्रस्त रुचियों पर काबू पाने की ज़रूरत है।

मानव-एकता का हामी जातिवाद का विरोधी :- सिख धर्म, ब्राह्मण धर्म के वर्ण-आश्रम धर्म का कट्टर विरोधी है। वर्ण-बांट के अनुसार पहले मनुष्य को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र आदि जातियों में बांटा गया है। शूद्रों को मानव समाज में पशुओं से भी बुरा दर्जा दिया गया है। इनको धर्म पुस्तकें पढ़ने, धार्मिक कर्म करने और (हिन्दू) धर्म को धारण करने का कोई अधिकार नहीं था। ये

बाकी के तीन वर्गों की निष्काम सेवा करते थे। नीच से नीच समझा जाने वाला काम करते थे पर तो भी उनसे दूर-दूर (फिटकार खाते) कराते थे। ये अछूत थे, जिन्हें स्पर्श मात्र से ही दूसरे लोग अपवित्र हो जाते थे। प्राचीन धर्म पुस्तकों के असर के कारण इन लोगों के साथ दुर्व्यवहार होता था। इन्हें गर्दन सीधी करके चलने का अधिकार नहीं था, बस्ती से दूर रहते थे और गरीबी तथा कंगाली का जीवन जीते थे।

गुरु साहिबान ने जातिवाद और शुद्रों के साथ हो रहे बर्ताव के विरुद्ध आवाज़ उठायी। अपने आप को इनका साथी बताया और कहा कि जहां नीच कहे जाने वालों की सेवा-संभाल होती है, वहां प्रभु की मेहर की नज़र होती है। गुरु साहिबान का फ़रमान है

नीचा अंदरि नीच जाति, नीची हूँ अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि, वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि, तिथै नदरि तेरी बख्सीस। (सिरी राग, मः १,१५)

मनुष्यों में ऊंची नीच छुआछूत अमीर गरीब का भेद मिटाने के लिए गुरु साहिबान ने लंगर प्रथा जारी की, जहां पर सभी लोग मिलकर एक पंगत में बैठकर लंगर छकते हैं, गुरु साहिबान ने सरोवर और बावलियां बनवाई जहां सब मिलकर के इकट्ठे स्नान करते हैं गुरुद्वारे में सभी को एक संगत में बिठाया जाता है गुरु साहिबान सबको एक उपदेश देते हैं।

दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंघ साहेब जी ने सब वर्णों और सब जाति के लोगों को एक ही बाटे में अमृत छकाया ताकि उनके मन में जाति-पात छुआछूत ऊंच नीच का विचार मूल से ही खत्म हो जावे और गुरु साहिबान ने सबको अपना बेटा बनाया।

जाणुह जोति न पूछहु जाती, आगै जाती न हे ॥
(आसा म. 1 पन्ना 348)
आगै जाति रूप न जाइ, तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥ (आसा मः 3 ,363)
अगै जाति न जोरू है, अगै जीउ नवे।
जिनकी लेखै पति पवै, चंगे सेई केइ ॥ (वार, आसा, मः 1,469)
जाति का गरबु न करि मुरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥ (भैरउ, मः 3,1128)
ऐकु पिता ऐकस के हम बारिक, तू मेरा गुरु हाई ॥ (सोरठि, मः 5, 611)
एको पवणु, माटी सभ ऐका, सभ ऐका जोति सबईया ॥ (माझ, मः 4,96)
अवलि अलह नुरु उपाइया, कुदरति के सभ बंदे।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥
लोगा भरमि न भुलहु भाई ॥
खालिकु खलक खलक महि खालिद पूर रहिओ सरब ठांई ॥ (प्रभाती कबीर जी 1349)

बेगमपुरा दर्शन पर आधारित महाराजा रणजीत सिंह के राज की महान विशेषताएं ~

महाराजा रणजीत सिंह का "बेगमपुरा खालसा राज" न्याय, समानता और समृद्धि का आदर्श उदाहरण था। उन्होंने शिक्षा, समाज, राजनीति, धर्म, न्याय और सुरक्षा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार किए। उनकी शासन प्रणाली सभी वर्गों को साथ लेकर चलने वाली थी।

1. शिक्षा व्यवस्था~ महाराजा रणजीत सिंह ने शिक्षा को समाज के विकास का आधार माना।

धार्मिक और नैतिक शिक्षा: गुरुकुलों, मदरसों और पाठशालाओं में धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कराया जाता था।

भाषाओं का विकास: पंजाबी, फारसी, उर्दू और संस्कृत भाषा की शिक्षा दी जाती थी।

व्यावसायिक शिक्षा: कृषि, शिल्प और व्यापार के व्यावसायिक ज्ञान को महत्व दिया गया।

महिलाओं की शिक्षा: महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिया गया।

मुफ्त शिक्षा: गरीब और अमीर सभी को निशुल्क शिक्षा प्रदान की गई।

विदेशी विद्वानों का स्वागत: महाराजा ने विदेशी शिक्षकों और विद्वानों को अपने दरबार में आमंत्रित किया।

पुस्तकालयों का निर्माण: गुरुद्वारों और धार्मिक स्थलों में पुस्तकालय बनाए गए।

2. सामाजिक व्यवस्था~

महाराजा रणजीत सिंह का समाज न्याय, समानता और भाईचारे पर आधारित था।

सामाजिक समानता: जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव को समाप्त किया गया।

महिलाओं का सम्मान: महिलाओं को सामाजिक और कानूनी अधिकार दिए गए।

सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन: सती प्रथा, बाल विवाह और अन्य कुरीतियों को समाप्त किया गया।

गरीबों की सहायता: गरीब और वंचित वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाएं लागू की गईं।

सार्वजनिक कार्य: सड़कों, नहरों और पुलों का निर्माण कराया गया।

धार्मिक और सांस्कृतिक एकता: विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोगों के बीच सौहार्द स्थापित किया गया।

3. राजनीतिक व्यवस्था~

महाराजा रणजीत सिंह की राजनीतिक व्यवस्था कुशल, संगठित और धर्मनिरपेक्ष थी।

धर्मनिरपेक्ष शासन: प्रशासन धर्म से ऊपर उठकर निष्पक्षता के साथ चलाया गया।

प्रशासनिक विभाजन: राज्य को छोटे-छोटे प्रशासनिक इकाइयों में बांटा गया।

कुशल प्रशासन: योग्य अधिकारियों की नियुक्ति की गई।

सीमाओं का विस्तार: कश्मीर, पेशावर, मुल्तान और अन्य क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की।

विदेश नीति: अंग्रेजों और अन्य पड़ोसी राज्यों के साथ कूटनीतिक संबंध बनाए गए।

सैन्य संगठन: यूरोपीय शैली की संगठित और अनुशासित सेना बनाई गई।

राजकोष का प्रबंधन: राज्य के धन का उपयोग जनहित और विकास कार्यों में किया गया।

4. धार्मिक व्यवस्था~

महाराजा रणजीत सिंह की धार्मिक व्यवस्था सहिष्णुता और समानता पर आधारित थी।

धार्मिक सहिष्णुता: हिंदू, सिख और मुसलमान सभी को समान धार्मिक स्वतंत्रता दी गई।

धार्मिक स्थलों का संरक्षण: दरबार साहिब और अन्य धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण और संरक्षण किया गया।

सर्वधर्म समभाव: सभी धर्मों और उनके त्योहारों का सम्मान किया गया।

धार्मिक शिक्षा: गुरुद्वारों और मदरसों में नैतिक और धार्मिक शिक्षा दी गई।

धर्मार्थ कार्य: धार्मिक स्थलों और शिक्षा संस्थानों को अनुदान प्रदान किया गया।

नानकशाही सिक्के: "नानकशाही" सिक्कों का प्रचलन किया गया, जो धार्मिक एकता का प्रतीक था।

5. न्याय व्यवस्था~

महाराजा रणजीत सिंह की न्याय व्यवस्था निष्पक्ष और प्रभावी थी।

न्यायप्रिय शासन: सभी वर्गों को समान न्याय दिया गया।

धर्मनिरपेक्ष न्याय: न्याय प्रणाली में धर्म का हस्तक्षेप नहीं था।

न्यायालयों की स्थापना: गांवों और शहरों में स्थानीय न्यायालय स्थापित किए गए।

भ्रष्टाचार पर रोक: न्यायिक और प्रशासनिक अधिकारियों में पारदर्शिता सुनिश्चित की गई।

गरीबों के लिए न्याय: गरीबों और वंचितों को मुफ्त कानूनी सहायता दी गई।

सख्त दंड: अपराधियों के लिए कठोर दंड सुनिश्चित किया गया।

स्थानीय स्वायत्तता: गांवों को न्यायिक मामलों में स्वायत्तता दी गई।

6. सुरक्षा व्यवस्था~

महाराजा रणजीत सिंह ने राज्य की सुरक्षा के लिए आधुनिक और संगठित प्रणाली अपनाई।

संगठित सेना: यूरोपीय शैली की सेना बनाई गई, जिसमें आधुनिक हथियारों का उपयोग होता था।

सैन्य अनुशासन: सेना में कठोर अनुशासन लागू किया गया।

सीमाओं की सुरक्षा: राज्य की सीमाओं को सुरक्षित और मजबूत बनाया गया।

विदेशी विशेषज्ञों की नियुक्ति: फ्रांसीसी और अन्य यूरोपीय सैन्य विशेषज्ञों को सेना में नियुक्त किया गया।

किले और दुर्ग: राज्य की सुरक्षा के लिए मजबूत किलों और दुर्गों का निर्माण किया गया।

अफगान आक्रमणों का अंत: महाराजा रणजीत सिंह ने पंजाब को अफगान आक्रमणों से सुरक्षित किया।

सैनिकों की भलाई: सैनिकों को बेहतर सुविधाएं और वेतन दिया गया।

विशेषताएं~

1. शिक्षा: ज्ञान और नैतिकता को प्राथमिकता दी गई।
2. सामाजिक व्यवस्था: समानता और भाईचारे का माहौल बनाया गया।
3. राजनीति: कुशल प्रशासन और सैन्य शक्ति का प्रदर्शन।

4. धर्म: सहिष्णुता और सर्वधर्म समभाव को बढ़ावा दिया गया।
5. न्याय: निष्पक्ष और पारदर्शी न्याय प्रणाली लागू की गई।
6. सुरक्षा: राज्य को आंतरिक और बाहरी खतरों से सुरक्षित बनाया गया।

महाराजा रणजीत सिंह का **"बेगमपुरा खालसा राज"** एक आदर्श राज्य का प्रतीक था। उनकी कुशल शासन प्रणाली, न्यायप्रियता, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक समानता ने उनके राज्य को एक आदर्श समाज में परिवर्तित कर दिया। उनका शासन मानवता, शांति और प्रगति का प्रेरणास्त्रोत है।

बेगम पुरा आदर्श राज में निम्नलिखित अधिकारों की गारंटी होगी ~

1. फ्री शिक्षा का अधिकार हर एक नागरिक को होगा।
2. बेगम पुरा सरकार हर नागरिक को फ्री इलाज की गारंटी देगी।
3. बेगम पुरा सरकार हर नागरिक को रोजगार की गारंटी देगी छोटी पोस्ट से लेकर बड़ी पोस्ट तक सबको समान सम्मान दिया जाएगा।
4. सरकार हर एक नागरिक की मूल जरूरतों को पूरा करेगी।
5. हर व्यक्ति को लाइसेंस फ्री हथियार रखने की आजादी होगी।
6. किसी भी केस का विचारण जूरी सिस्टम से मात्र 30 दिन के भीतर करके न्याय दिया जाएगा।
7. बिना सिद्धदोष किए किसी भी व्यक्ति को जेल में नहीं डाला जाएगा।
8. हत्या और बलात्कार की सजा केवल फांसी होगी।
9. सामाजिक बराबरी होगी अर्थात कोई भी व्यक्ति किसी के भी साथ जाति,धर्म, संप्रदाय, लिंग, जन्म स्थान के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करेगा। इसका उल्लंघन करने पर सजा ए मौत होगी।
10.सभी नागरिकों को आर्थिक और शैक्षणिक समानता होगी।
11. कोई भी वी.आई.पी. कल्चर नहीं होगा।
12. भयमुक्त, अपराधमुक्त राज की हर नागरिक को गारंटी होगी।
13. देश के अंदर हर प्रकार का नशा प्रतिबंधित होगा।
14. पाखण्ड, ढोंग, अंधविश्वास, चमत्कार फैलाना अपराध होगा अगर कोई दोषी पाया जाएगा तो उसको उचित सजा दी जाएगी।
15. बेगमपुरा सरकार सरकारी सेवाएं घर आकर प्रदान करेगी।

सिख धर्म एक प्रचारक धर्म है ~

सिख धर्म एक प्रचारक धर्म है इसका मूल उद्देश्य मानवता की सेवा, सत्य, समानता और ईश्वर के प्रति भक्ति को बढ़ावा देना है। सिख धर्म को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में जिन महापुरुषों की वाणी दर्ज है सबने सिख दर्शन का प्रचार प्रसार किया ,इसे विकसित किया और अंततः गुरु ग्रंथ साहिब को सिखों का स्थायी गुरु घोषित किया गया। गुरु के सिखों को गुरु साहिब ने यह अधिकार दिया हुआ है कि वे सिख दर्शन का प्रचार प्रसार कर सकते हैं और लोगों को गुरु के साथ जोड़ सकते हैं। सिख धर्म में इतनी स्वतंत्रता है कि किसी भी व्यक्ति को चाहे वह कहीं का भी हो गुरु के साथ

जोड़ा जा सकता है। सिख धर्म में ईश्वर को निराकार, सर्वशक्तिमान और एक माना जाता है। यह धर्म **"नाम जपो, किरत करो, वंड छको"** के सिद्धांत पर आधारित है, जिसका अर्थ है ईश्वर का नाम स्मरण करना, ईमानदारी से मेहनत करना और अपनी आय का एक हिस्सा जरूरतमंदों के साथ बांटना। सिख धर्म के प्रचारक स्वरूप में लंगर की परंपरा, गुरुद्वारों में सेवा, और धार्मिक शिक्षाओं का प्रसार शामिल है। किसी भी जाति,किसी भी वर्ण किसी भी कुल खानदान, किसी भी स्थान का कोई भी व्यक्ति गुरु के दर्शन को फॉलो कर सकता है और गुरु का सिख बन सकता है। अतः वर्तमान में गुरु के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी गुरु के हर सिख की है कि वह सिखी का प्रचार प्रसार बढ़-चढ़कर करें और गुरु के दर्शन से लोगों को जोड़े ताकि देश में समानता, मानवता, प्रेम, भाईचारे का बोलबाला हो और लोग गुरु की शरण में लग कर परमात्मा की भक्ति करते हुए अपने जीवन को सफल और गौरवपूर्ण बनाएं।

समाज में स्थाई परवर्तन कैसे हो ??? ~~~

विज्ञान के अनुसार परिवर्तन दो तरह का होता है---

(1)भौतिक परिवर्तन~ भौतिक परिवर्तन किसी भी पदार्थ के स्वरूप का मात्र बाह्य परिवर्तन होता है जिसमें किसी भी पदार्थ का आकार वह अवस्था बदल जाती है, लेकिन पदार्थ का गुणधर्म नहीं बदलता है....

जैसे ~ पानी से बर्फ बनना, पानी से वाष्प बनना, लोहे के टुकड़े को किसी भी आकार में ढाल देना आदि।

भौतिक परिवर्तन अस्थाई परिवर्तन होता है।

(2) रासायनिक परिवर्तन ~ रासायनिक परिवर्तन वह परिवर्तन होता है जिसके होते ही किसी भी पदार्थ के गुणधर्म पूरी तरह से बदल जाते हैं और पदार्थ की अवस्था भी बदल जाती है। **जैसे ~** दूध से दही बनना, किसी भी पदार्थ को जला देने पर उसकी राख बनना आदि....

रासायनिक परिवर्तन स्थाई होता है।

समाज में परिवर्तन को 3 तरह से देख सकते हैं~

(1) सामाजिक परिवर्तन (अल्पकालिक परिवर्तन)

(2) राजनैतिक परिवर्तन (दीर्घकालिक परिवर्तन)

(3) सांस्कृतिक परिवर्तन (स्थाई परिवर्तन)

(1) सामाजिक परिवर्तन (अल्पकालिक परिवर्तन) ~ सामाजिक परिवर्तन अल्पकालिक **परिवर्तन होता है जैसे ~** गांव में शराबबंदी करना, मृत्यु भोज बंद करना, शादियों में बैंड बाजे बंद करना, दहेज लेना एवं देना बंद करना।

इस प्रकार के परिवर्तन समाज में थोड़े समय तक चलते हैं समाज का कोई ना कोई व्यक्ति इस प्रकार के परिवर्तन के संबंध में बनाए गए नियमों को भंग कर देता है और इस दिशा में की गई मेहनत व्यर्थ चली जाती है, इसलिए इस प्रकार के परिवर्तन को अल्पकालिक परिवर्तन कहा जाता है....इस दिशा में काम करना पूरी तरह से अपनी उर्जा को बर्बाद करने जैसा है.....

(2) राजनीतिक परिवर्तन (दीर्घकालिक परिवर्तन) ~ राजनीतिक परिवर्तन एक दीर्घकालिक परिवर्तन होता है जो कम से कम 5 या 10 साल तक बना रहता है। लेकिन एक निश्चित समय अवधि के बाद उस परिवर्तन का प्रभाव खत्म हो जाता है।

(3) सांस्कृतिक परिवर्तन (स्थाई परिवर्तन) ~ सांस्कृतिक परिवर्तन ही स्थाई परिवर्तन होता है समाज संस्कृति के अधीन है बिना संस्कृति के समाबीज नहीं चल सकता और संस्कृति धीरे-धीरे विकसित होती है।

हर समाज की, हर धर्म की अपनी अलग संस्कृति होती है और उस संस्कृति से ही पूरा समाज शासित होता है पूरा समाज जन्म से लेकर मृत्यु तक के सारे क्रिया कर्म उस संस्कृति के अनुरूप ही करता है। कुल मिलाकर संस्कृति धर्म के अधीन है....

जब भारत में पुष्यमित्र शुंग ने बौद्ध धर्म का विनाश किया बौद्धों का सामूहिक नरसंहार किया फिर बचे खुचे बौद्धों ने पुष्यमित्र शुंग की गुलामी स्वीकार की और कालांतर में बौद्ध धर्म भारत से विलुप्त हो गया इसका नतीजा यह हुआ बौद्ध संस्कृति का भी विनाश हुआ जो बचे हुए बौद्ध थे उन पर ब्राह्मणवादियों के द्वारा अपनी संस्कृति थोप दी गई अपना धर्म थोप दिया गया और उन्हें चतुर्वणीय व्यवस्था के द्वारा गुलाम बना लिया गया..... अछूत गुलामी के षड्यंत्र को अपनी संस्कृति समझ बैठे........

वह गुलामी भारत के अछूतों में इस तरह से घर कर गई कि उसे उन्होंने अपनी संस्कृति समझ लिया उसे उन्होंने अपनी नियति समझ लिया एक तरह से कहा जाए तो गुलामी ने संस्कृति का रूप ले लिया.....इसीलिए डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि "हिंदू धर्म गुलामों को गुलाम बनाए रखने का षड्यंत्र है।" आज अछूतों के अंदर उनके दिल दिमाग में गुलामी की संस्कृति घर कर गई है जिससे उन्हें निकालना लगभग असंभव सा प्रतीत होता है हम लोगों को उनकी संस्कृति को छोड़ने पर मजबूर नहीं कर सकते हैं इसका एक उपाय है कि हम लोगों को दूसरी संस्कृति अपनाने के लिए राजी जरूर कर सकते हैं......और यह होगा सांस्कृतिक परिवर्तन के द्वारा.....

बौद्ध धर्म का भारत में रासायनिक परिवर्तन किया जा चुका है उनकी संस्कृति को नष्ट किया जा चुका है एक तरह से बौद्ध धर्म का सर्वनाश किया जा चुका है.....

मैंने ऊपर रासायनिक परिवर्तन का जिक्र किया रासायनिक परिवर्तन की खासियत होती है किसी पदार्थ में एक बार रासायनिक परिवर्तन हो जाए तो वह लौटकर अपनी स्थिति में वापस नहीं आ सकता है जैसे एक बार दूध फट जाए तो दूध से दही बन जाएगा, दही से मट्ठा बन जाएगा , घी बन जाएगा, लेकिन, लौटकर दूध नहीं बन सकता है.....

भारत में बौद्ध धर्म कभी भी सफल नहीं हो सकता है इसका सिर्फ कारण एक है उसकी संस्कृति समूल नष्ट हो गई है उसका रासायनिक परिवर्तन हो चुका है......

इसीलिए बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर ने 13 अक्टूबर 1956 को धर्मांतरण के एक दिन पहले पत्रकारों को इंटरव्यू देते हुए कहा था

"मैंने गांधी जी को वचन दिया था कि मैं ऐसा कोई धर्म ग्रहण नहीं करूंगा जो भारत की संस्कृति को ज्यादा नुकसान पहुंचाए मैं बौद्ध धर्म इसलिए ग्रहण कर रहा हूं ताकि भारत की संस्कृति (हिंदू

संस्कृति) को कम से कम नुकसान पहुंचे" भारत की संस्कृति का यहां मतलब हिंदू धर्म की संस्कृति से है.............बौद्ध धर्म ग्रहण करने के लिए हिंदू महासभा के अध्यक्ष डॉ मुंजे और गांधी ने डॉ. अंबेडकर को राजी किया था इसके संबंध में आप वॉल्यूम नंबर 17 पार्ट वन पेज नंबर 239 तथा डॉ. अंबेडकर का 13 अक्टूबर 1956 का इंटरव्यू अंबेडकर लाइफ एंड मिशन धनंजय कीर की किताब में पेज नंबर 498 पर पढ़ सकते हैं।

यदि हम अछूतों के अंदर स्थाई परिवर्तन लाना चाहते हैं तो उन्हें अपनी वास्तविक संस्कृति और अपने धर्म को ग्रहण करना ही होगा बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर ने दा बुद्ध एंड हिस धम्मा में एक जगह जिक्र किया है कि ~"मानव की आजादी का अंतिम साधन हथियार उठाना है लेकिन ब्राह्मणवादियों ने शूद्रों और अछूतों को हथियार उठाने के अधिकार से वंचित कर दिया।" (बुद्ध और उनका धम्म पेज नंबर 90) हम अपने अछूत भाइयों (दलित वर्ग) से निवेदन करते हैं कि आप अपनी पूर्ण आजादी के लिए हथियारबंद धर्म ग्रहण करें और अपने आप को गुलामी से मुक्त करें......आप हथियारबंद धर्म ग्रहण करें ताकि तुम्हें कोई फिर से गुलाम नहीं बना सके...

सिखों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा है ~

"चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊं,
गीदड़ों को मैं शेर बनाऊं।
सवा लाख से एक लड़ाऊं,
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊँ॥"

धर्म परिवर्तन= संस्कृति परिवर्तन
संस्कृति परिवर्तन = व्यवस्था परिवर्तन
व्यवस्था परिवर्तन =स्थाई परिवर्तन
निडर बनो.......... निर्भय बनो.......... सिख बनो..............

ये आजादी कैसी है ???~

बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि भारत को आजाद हुए 75 साल हो गए हैं, फिर भी देश में भयंकर गुलामी है, भयंकर जातिवाद है, भयंकर गरीबी है, भयंकर शैक्षणिक विषमता है, लोगों को पढ़ने से रोका जा रहा है, चारों और विषमता पसरी है, लोग जानवरों से भी बदतर जिंदगी जीने को मजबूर हैं। वर्तमान में जाति और गरीबी के आधार पर लोगों के साथ अन्याय, अत्याचार,शोषण,उत्पीड़न,भयंकर तौर पर चल रहा है। बेरोजगारी भयंकर है, लोग भूखे मरने के कगार पर हैं, भुखमरी फैली हुई है,गरीबी के चलते जिस्मफरोशी जोरों पर है। लोग इलाज के अभाव में मर रहे हैं, लोगों के पास तन ढकने को कपड़े नहीं हैं, रहने को मकान नहीं है, थाली में भोजन नहीं है, दूसरी ओर अथाह संपत्ति है, चंद लोगों ने अकूत संपत्ति जमा कर ली है।

देश की एक तिहाई पर संपत्ति पर चंद लोगों का कब्जा है, उद्योग,कारखाने, भूमि, बाजार सब उनके कब्जे में है, देश की 90 फ़ीसदी आबादी देश की अर्थव्यवस्था से पूरी तरह से बाहर है।

आखिर हमें इस आजादी से क्या मिला ??? देश किसका गुलाम है ????

इस देश का मालिक कौन है ??? इस व्यवस्था को कौन चला रहा है ???

जो लोग हम पर मनुस्मृति से शासन कर रहे थे, वही आज हम पर देश की आजादी के बाद से शासन कर रहे हैं, वही इस देश के मालिक हैं। और वे ही इस देश को चला रहे हैं,
वे ही इस देश को कानूनी रूप से गुलाम बनाए हुए हैं इसलिए मैं कहता हूं कि भारत देश संवैधानिक तौर पर गुलाम है। भारत देश के नागरिक कानूनी तौर पर गुलाम हैं आज देश में जाति के आधार पर उतना ही भेदभाव है, जाति के आधार पर उतनी ही विषमता है। जाति के आधार पर उतना ही शोषण और उत्पीड़न है। देश की महिलाओं को नंगा घुमाया जा रहा है हमारी बहन बेटियों के बलात्कार करके जिंदा जलाया जा रहा है। हमारे नौजवानों की हत्या की जा रही है।
हमारे देश के लोगों को जाति के आधार पर प्रताड़ित किया जा रहा है। हमारे देश के लोग अन्याय अत्याचार शोषण उत्पीड़न हत्या बलात्कार के भयंकर शिकार हैं। देश की जेलों में ज्यादातर निर्दोष बंद किए हुए हैं। जो लोग देश के लिए कुछ करना चाहते हैं उनको झूठे मुकदमे लगाकर जेल में बंद किया हुआ है। यहां भयंकर नस्लवाद फैला हुआ है। धार्मिक उन्माद है। धर्म के आधार पर लोगों को चुन चुन कर के मारा जा रहा है ,उनके मकानों पर बुलडोजर चलाए जा रहे हैं उनके घरों और दुकानों में आग लगाई जा रही है। ये कैसी आज़ादी है जहां देश तो आजाद है। लेकिन देशवासी गुलाम हैं। एक ही वर्ग ने देश की शासन सत्ता पर कब्जा कर लिया है।
एक ही वर्ग ने देश की अर्थव्यवस्था धन धरती पर कब्जा कर लिया है। न्याय व्यवस्था उनके हाथ में है। बैंक प्रणाली उनके हाथ में है। अपने चहेतों को हजारों लाखों करोड़ों का लोन देकर माफ करना उनके हाथ में है। कोई आवाज बुलंद करता है तो उसको मरवाना उसको जेल में बंद करना उनके हाथ में है। देश में दंगे करवाना मार काट करवाना उनके हाथ में है।
एक वर्ग है जिसने पूरे देश के लोगों को गुलाम बना लिया है। तभी तो डॉ. अंबेडकर ने 18 मार्च 1956 को आगरा के ऐतिहासिक भाषण में जन समूह को संबोधित करते हुए कहा था ~ तुम्हें एकजुट होकर निरंतर संघर्ष करना होगा और तुम्हें सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक गुलामी को मिटाने के लिए हर प्रकार की कुर्बानी देने के लिए यहां तक कि अपना खून बहाने के लिए भी तैयार रहना होगा। हम सामाजिक रूप से आज भी गुलाम हैं। पूरे देश में ऊंच-नीच ,जातिवाद, छुआछूत चरम पर है। हम आर्थिक तौर पर आज भी गुलाम हैं।
एक और घनघोर गरीबी है तो दूसरी ओर अथाह अमीरी है। शैक्षणिक तौर पर भी हम आज भी गुलाम हैं। विडंबना यह है कि राजनैतिक दलों और ब्राह्मणवादी ताकतों ने पूरे देश को गुमराह किया हुआ है। और इस षड्यंत्र में दलित नेता भी शामिल हैं। जो देश की गुलामी को दूर करने के लिए कोई संघर्ष नहीं करना चाहते हैं कोई आवाज बुलंद नहीं करना चाहते हैं देश के लोगों को ने चिंता नहीं है वे लोग अपनी तिजोरिया भरने में मस्त हैं अपने बच्चों को विदेशों में पढ़ा कर उनको व्यवस्थित करने में लीन है उन्हें किसी की कोई चिंता नहीं उन्हें देश की देशवासियों की कोई चिंता नहीं!
ऐसे स्वार्थी और मक्कार नेताओं ने देश को चंद पूंजी वादियों का ब्राह्मण वादियों का सामंत वादियों का गुलाम बनाया हुआ है।
अब हमारी जिम्मेदारी है कि हम आजाद देश के गुलाम देशवासियों को गुलामी से मुक्त कराएं।

जिनकी जात और कुल माहीं,
सरदारी ना भई किदाही ।
तिनही को सरदार बनाऊँ,
तबै गोबिन्द सिंघ नाम कहाऊं।
गुजर, लुहार, अहीर, कमजात,
कंबो शुद्र, ना को पुछे बात।
झीवर, नाई और रोड़े, घूमिआर,
सैणी, सुनिआरे, चुहड़े चमिआर।
भट ओ ब्राह्मण, हुते मंगवार,
बहुरूपीए, लुबाणे, और घुमिआर।
इन गरीब सिखन को देंउ पातशाही,
याद करें हमरी गुरिआई ।

Our Organisation:

Begam Pura Research Centre

Mob. 88824-32930, 99773-00997

मूल्य 30 रूपये